ShodhSamajik: Journal of Social Studies
July-September 2026 3(2)
https://shodhsamajik.com/

Original Article

A REGIONAL STUDY OF EMOTIONAL INTELLIGENCE AMONG URBAN AND RURAL ADOLESCENT STUDENTS BASED ON LEVELS OF SMARTPHONE ADDICTION

शहरी एवं ग्रामीण किशोर विद्यार्थियों में स्मार्ट फोन आसक्ति के स्तर के अनुसार भावनात्मक बुद्धिमत्ता का क्षेत्रीय अध्ययन

Devayani Shukla [1*], **Dr. Sunita Yadav** [2]
[1] Research Scholar, Department of Education, Shri Rawatpura Sarkar University, Raipur, Chhattisgarh, India
[2] Assistant Professor, Department of Education, Shri Rawatpura Sarkar University, Raipur, Chhattisgarh, India

ABSTRACT

English: The widespread availability of digital tools has reshaped the daily routines, communication styles, and learning processes of adolescent students. Smartphones, in particular, have emerged as a medium that integrates study, information, entertainment, and social interaction into a single device. Alongside the benefits, it is crucial to examine how the growing dependence on smartphones relates to the emotional functioning of students. This research paper aims to conduct a comparative analysis of emotional intelligence among urban and rural adolescent students based on low and high levels of smartphone addiction. The study is based on 800 ninth-grade students—comprising 400 urban and 400 rural students—from selected government high schools in Raipur district. Smartphone addiction was measured using the scale developed by Dr. Vijayshree and Dr. Masood Ansari, while emotional intelligence was assessed using the scale developed by Dr. Arun Kumar Singh and Dr. Shruti Narayan. The mean smartphone addiction score for the entire sample was 70.16; students scoring 70 or below were categorized into the 'low impact' group, while those scoring 71 or above were placed in the 'high impact' group. Mean, standard deviation, and independent sample t-tests were employed for analysis. In the urban area, the mean emotional intelligence score was 22.17 for the low-impact group and 14.21 for the high-impact group; in the rural area, the corresponding means were 22.06 and 14.90. The differences observed in both regional analyses were found to be statistically significant. The findings indicate that there is a notable difference in the emotional intelligence of students—in both urban and rural contexts—based on their level of smartphone addiction.

Hindi: डिजिटल साधनों की व्यापक उपलब्धता ने किशोर विद्यार्थियों की दिनचर्या, संचार शैली और सीखने की प्रक्रिया को नई दिशा दी है। स्मार्ट फोन विशेष रूप से ऐसा माध्यम बन गया है जो अध्ययन, सूचना, मनोरंजन और सामाजिक संपर्क को एक ही उपकरण में समाहित करता है। इसके लाभों के साथ यह प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण है कि स्मार्ट फोन पर बढ़ती निर्भरता विद्यार्थियों की भावनात्मक कार्यप्रणाली से किस प्रकार जुड़ती है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण किशोर विद्यार्थियों में स्मार्ट फोन आसक्ति के कम एवं अधिक स्तरों के अनुसार भावनात्मक बुद्धिमत्ता का क्षेत्रीय विश्लेषण करना है। शोध रायपुर जिले के चयनित शासकीय उच्च विद्यालयों में कक्षा 9वीं में अध्ययनरत 800 विद्यार्थियों पर आधारित है, जिनमें 400 शहरी और 400 ग्रामीण विद्यार्थी सम्मिलित थे। स्मार्ट फोन आसक्ति का मापन डॉ. विजयश्री एवं डॉ. मसऊद अंसारी द्वारा निर्मित स्मार्ट फोन आसक्ति मापनी तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का मापन डॉ. अरुण कुमार सिंह एवं डॉ. श्रुति नारायण द्वारा निर्मित भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी से किया गया। समस्त प्रतिदर्श के स्मार्ट फोन आसक्ति प्राप्तांकों का माध्य 70.16 प्राप्त हुआ; 70 अथवा उससे

*Corresponding Author:
Email address: Devayani Shukla (Devyani.Shukla@outlook.com)

Received: 06 July 2026; **Accepted:** 23 August 2026; **Published:** 28 September 2026
DOI: 10.29121/ShodhSamajik.v3.i2.2026.166
Page Number: 196-202
Journal Title: ShodhSamajik: Journal of Social Studies
Journal Abbreviation: ShodhSamajik J. Soc. Stud.
Online ISSN: 3049-2319, **Print ISSN:** 3108-2009
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

कम अंक वाले विद्यार्थियों को कम प्रभाव तथा 71 अथवा उससे अधिक अंक वाले विद्यार्थियों को अधिक प्रभाव समूह में रखा गया। विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन और स्वतंत्र नमूना टी-परीक्षण प्रयुक्त किया गया। शहरी क्षेत्र में कम प्रभाव समूह का भावनात्मक बुद्धिमत्ता माध्य 22.17 तथा अधिक प्रभाव समूह का माध्य 14.21 पाया गया; वहीं ग्रामीण क्षेत्र में ये माध्य क्रमशः 22.06 और 14.90 रहे। दोनों क्षेत्रीय विश्लेषणों में अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। निष्कर्ष संकेत करते हैं कि स्मार्ट फोन आसक्ति के स्तर के अनुसार शहरी और ग्रामीण दोनों संदर्भों में विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में उल्लेखनीय अंतर विद्यमान है।

Keywords: Smartphone Addiction, Emotional Intelligence, Adolescent Students, Urban Areas, Rural Areas, Digital Discipline, स्मार्ट फोन आसक्ति, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, किशोर विद्यार्थी, शहरी क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र, डिजिटल अनुशासन

प्रस्तावना

किशोर जीवन में तकनीक की उपस्थिति अब वैकल्पिक नहीं रही, बल्कि वह दैनिक अनुभवों का अभिन्न भाग बन चुकी है। पढ़ाई के लिए सामग्री खोजना, सहपाठियों से संपर्क करना, गृहकार्य साझा करना, वीडियो देखना, सामाजिक माध्यमों पर सक्रिय रहना और मनोरंजन प्राप्त करना—इन सभी गतिविधियों में स्मार्ट फोन की भूमिका लगातार बढ़ी है। इस परिवर्तन ने विद्यार्थियों को अनेक अवसर दिए हैं, परंतु साथ ही उपयोग की मात्रा और नियंत्रण से जुड़ी नई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। जब तकनीक का प्रयोग उद्देश्यपूर्ण आवश्यकता से आगे बढ़कर बार-बार जाँचने, निरंतर जुड़े रहने या उपयोग रोकने में कठिनाई जैसी प्रवृत्तियों में बदलने लगता है, तब उसे केवल सामान्य उपयोग के रूप में नहीं देखा जा सकता।

विद्यालयी किशोरों के संदर्भ में यह विषय विशेष रूप से संवेदनशील है, क्योंकि इस अवस्था में आत्म-पहचान, सामाजिक स्वीकृति, मित्रता, आत्म-नियंत्रण और भावनात्मक अभिव्यक्ति का विकास तेज गति से होता है। किशोर विद्यार्थी बाहरी प्रतिक्रियाओं से अधिक प्रभावित हो सकते हैं और त्वरित संचार या सामाजिक माध्यमों से मिलने वाली प्रतिक्रिया उनके मनोभावों को प्रभावित कर सकती है। दूसरी ओर, यही तकनीक शैक्षणिक सहयोग, रचनात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक संपर्क का सकारात्मक साधन भी हो सकती है। इसलिए समस्या स्मार्ट फोन की उपस्थिति मात्र नहीं है, बल्कि उसके उपयोग के स्वरूप, निर्भरता और नियंत्रण में निहित है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों की उस क्षमता से संबंधित है जिसके द्वारा वे अपनी भावनाओं को पहचानते, समझते और व्यवस्थित करते हैं तथा दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील प्रतिक्रिया देते हैं। इसमें भावनाओं की समझ, प्रेरणा की समझ, सहानुभूति और संबंध प्रबंधन जैसे आयाम सम्मिलित हैं। विद्यालयी जीवन में ये क्षमताएँ सहयोग, आत्म-अनुशासन, तनाव से निपटने, निर्णय लेने और स्वस्थ सामाजिक संबंध बनाए रखने में उपयोगी होती हैं। डिजिटल जीवन के विस्तार के कारण यह आवश्यक हो गया है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन तकनीकी व्यवहार से अलग न करके उसके साथ जुड़े संदर्भ में किया जाए।

शहरी और ग्रामीण विद्यालयी परिवेश तकनीकी पहुँच, पारिवारिक परिस्थितियों, इंटरनेट सुविधा, सामाजिक अनुभवों और डिजिटल अवसरों की दृष्टि से एक समान नहीं होते। फिर भी स्मार्ट फोन का प्रभाव दोनों प्रकार के परिवेश में तेजी से दिखाई दे रहा है। इसी कारण प्रस्तुत शोध-पत्र में लिंग-आधारित उपसमूहों के स्थान पर क्षेत्र को केंद्रीय आधार बनाया गया है और शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के संयुक्त समूहों में स्मार्ट फोन आसक्ति के कम एवं अधिक स्तरों के अनुसार भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विश्लेषण किया गया है। यह दृष्टिकोण क्षेत्रीय संदर्भों में डिजिटल व्यवहार और भावनात्मक विकास को समझने का अवसर प्रदान करता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

किशोरावस्था और डिजिटल व्यवहार

किशोरावस्था तीव्र शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं भावनात्मक परिवर्तन की अवस्था है। इस अवधि में विद्यार्थी स्वतंत्रता की इच्छा, मित्र-समूह की स्वीकृति, पहचान निर्माण और भविष्य संबंधी अपेक्षाओं के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करते हैं। डिजिटल माध्यमों ने इन अनुभवों के स्वरूप को बदल दिया है। स्मार्ट फोन किशोरों को तत्काल संपर्क, मनोरंजन और सूचना प्रदान करता है, किंतु लगातार उपलब्धता के कारण उपयोग की सीमा निर्धारित करना कठिन भी हो सकता है। इसलिए किशोर डिजिटल व्यवहार को केवल तकनीकी दक्षता का संकेत न मानकर आत्म-नियमन और दैनिक संतुलन के संदर्भ में भी समझना आवश्यक है।

स्मार्ट फोन आसक्ति की प्रकृति

स्मार्ट फोन आसक्ति ऐसी व्यवहारगत स्थिति को इंगित करती है जिसमें व्यक्ति स्मार्ट फोन उपयोग पर अपेक्षित नियंत्रण बनाए रखने में कठिनाई अनुभव करता है। इसके साथ बाध्यकारी उपयोग, बार-बार फोन देखने की प्रवृत्ति, ध्यान में व्यवधान, नींद एवं दिनचर्या में परिवर्तन, चिंता तथा प्रत्यक्ष सामाजिक सहभागिता में कमी जैसी प्रवृत्तियाँ जुड़ सकती हैं। बेरानुई और सहकर्मियों ने समस्यात्मक इंटरनेट एवं मोबाइल उपयोग के अध्ययन में भावनात्मक प्रक्रियाओं की भूमिका को महत्त्वपूर्ण पाया। इस प्रकार स्मार्ट फोन आसक्ति का अध्ययन केवल उपयोग की अवधि से नहीं, बल्कि उसकी मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारगत तीव्रता से किया जाना अधिक सार्थक है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म-नियमन

भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को भावनात्मक संकेतों का अर्थ समझने, परिस्थितियों के अनुरूप प्रतिक्रिया देने और पारस्परिक संबंधों को संतुलित बनाए रखने में सहायता करती है। किशोर विद्यार्थियों के लिए आत्म-नियमन इसका विशेष महत्त्वपूर्ण पक्ष है, क्योंकि अध्ययन, मित्रता, प्रतिस्पर्धा और डिजिटल आकर्षण के बीच उन्हें अनेक त्वरित निर्णय लेने पड़ते हैं। मास्चिया, अगुस एवं पेन्ना (2020) ने किशोर विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-नियमन, स्मार्ट फोन आसक्ति और

जीवन-गुणवत्ता के अंतर्संबंधों का अध्ययन करते हुए आत्म-नियमन को विद्यार्थी कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण माना। उनके निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि किशोरों में तकनीकी उपयोग की जागरूकता और भावनात्मक क्षमताओं का विकास विद्यालयी कल्याण से जुड़ा विषय है।

समस्यात्मक स्मार्ट फोन उपयोग और भावनात्मक प्रक्रियाएँ

Arrivillaga et al. (2022) ने किशोरों में मनोवैज्ञानिक तनाव, विचारों की पुनरावृत्ति, समस्यात्मक स्मार्ट फोन उपयोग और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के अंतर्संबंध का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन से यह संकेत मिला कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता नकारात्मक मनोवैज्ञानिक अनुभवों और समस्यात्मक स्मार्ट फोन उपयोग को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसी प्रकार पूर्ववर्ती अध्ययनों ने यह भी दर्शाया है कि भावनात्मक प्रबंधन में कठिनाई और समस्यात्मक डिजिटल उपयोग एक-दूसरे से संबंधित हो सकते हैं। ये निष्कर्ष इस आवश्यकता को पुष्ट करते हैं कि विद्यालयी विद्यार्थियों में स्मार्ट फोन व्यवहार का अध्ययन भावनात्मक विकास के संदर्भ में भी किया जाए।

क्षेत्रीय संदर्भ की आवश्यकता

शहरी और ग्रामीण किशोरों का डिजिटल अनुभव समान होना आवश्यक नहीं है। शहरी क्षेत्र में तेज इंटरनेट, निजी उपकरण, डिजिटल सेवाओं तथा सामाजिक माध्यमों तक अधिक सहज पहुँच हो सकती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में उपलब्धता, नेटवर्क, पारिवारिक संसाधन और विद्यालयी सुविधा उपयोग की प्रकृति को प्रभावित कर सकते हैं। इसके बावजूद स्मार्ट फोन दोनों क्षेत्रों में संचार और शिक्षा का महत्त्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। इसलिए केवल कुल प्रतिदर्श के आधार पर निष्कर्ष निकालने के स्थान पर क्षेत्र-विशिष्ट विश्लेषण यह स्पष्ट कर सकता है कि स्मार्ट फोन आसक्ति के विभिन्न स्तरों के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्वरूप शहरी और ग्रामीण संदर्भों में किस प्रकार दिखाई देता है।

शोध-अंतराल

उपलब्ध साहित्य में समस्यात्मक स्मार्ट फोन उपयोग, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-नियमन तथा किशोर कल्याण पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं। तथापि रायपुर जिले के शासकीय उच्च विद्यालयों में कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों के संदर्भ में ऐसे क्षेत्रीय तुलनात्मक प्रमाण सीमित हैं जिनमें शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के संयुक्त समूहों को स्मार्ट फोन आसक्ति के कम एवं अधिक स्तरों में वर्गीकृत कर उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता की पृथक तुलना की गई हो। अनेक अध्ययनों ने सहसंबंधों पर बल दिया है, जबकि प्रस्तुत शोध-पत्र समूह-आधारित माध्य अंतर को केंद्र में रखता है। इस प्रकार यह शोध शहरी और ग्रामीण विद्यालयी संदर्भ में स्मार्ट फोन आसक्ति के स्तर तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच पाए जाने वाले अंतर की क्षेत्रीय तस्वीर प्रस्तुत करता है।

शोध के उद्देश्य

1) कम एवं अधिक स्मार्ट फोन आसक्ति वाले शहरी विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना करना।
2) कम एवं अधिक स्मार्ट फोन आसक्ति वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना करना।
3) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में प्राप्त माध्यांतर की वर्णनात्मक प्रवृत्ति का क्षेत्रीय अवलोकन करना।

शोध की शून्य परिकल्पनाएँ

1) कम एवं अधिक स्मार्ट फोन आसक्ति वाले शहरी विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
2) कम एवं अधिक स्मार्ट फोन आसक्ति वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

शोध-पद्धति

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध-पत्र में वर्णनात्मक, तुलनात्मक, मात्रात्मक एवं सर्वेक्षण-आधारित अप्रयोगात्मक अभिकल्प अपनाया गया। शोधकर्ता द्वारा किसी भी चर में प्रयोगात्मक परिवर्तन नहीं किया गया। विद्यार्थियों में स्वाभाविक रूप से विद्यमान स्मार्ट फोन आसक्ति का मापन किया गया और प्राप्तांकों के आधार पर कम एवं अधिक आसक्ति वाले स्वतंत्र समूह निर्मित किए गए। इसके बाद दोनों समूहों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्य प्राप्तांकों की तुलना शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पृथक-पृथक की गई। अतः यहाँ “प्रभाव” का अर्थ प्रत्यक्ष कारणात्मक प्रभाव नहीं, बल्कि स्मार्ट फोन आसक्ति के स्तर के अनुसार पाए गए सांख्यिकीय अंतर से है।

जनसंख्या

शोध की लक्षित जनसंख्या में रायपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित शासकीय उच्च विद्यालयों में कक्षा 9वीं में अध्ययनरत विद्यार्थी सम्मिलित थे। उपलब्ध अभिलेखों के अनुसार कुल 222 शासकीय उच्च विद्यालयों में 25,678 कक्षा 9वीं के विद्यार्थी अध्ययनरत थे। इनमें 58 शहरी विद्यालयों के 6,742 विद्यार्थी तथा 164 ग्रामीण विद्यालयों के 18,936 विद्यार्थी सम्मिलित थे।

प्रतिदर्श एवं चयन

व्यापक शोध के लिए कुल 800 विद्यार्थियों का प्रतिदर्श निर्धारित किया गया। इनमें 400 विद्यार्थी शहरी तथा 400 विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र से लिए गए। प्रत्येक क्षेत्र में छात्रों और छात्राओं को समान प्रतिनिधित्व दिया गया। विद्यालय चयन में भौगोलिक स्थिति, कक्षा 9वीं में पर्याप्त विद्यार्थी संख्या, विद्यालय की उपलब्धता तथा प्रशासनिक अनुमति जैसे मानदंडों को ध्यान में रखा गया। विद्यार्थियों का चयन समान आवंटन पर आधारित स्तरीकृत यादृच्छिक प्रक्रिया से किया गया।

तालिका 1

तालिका 1 प्रतिदर्श का क्षेत्रीय वितरण

क्षेत्र	छात्र	छात्राएँ	कुल
शहरी	200	200	400
ग्रामीण	200	200	400
कुल	**400**	**400**	**800**

शोध के चर

स्वतंत्र चर के रूप में स्मार्ट फोन आसक्ति का स्तर तथा आश्रित चर के रूप में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को ग्रहण किया गया। क्षेत्र—शहरी एवं ग्रामीण—वर्गीकरण चर था। स्मार्ट फोन आसक्ति के उच्च प्राप्तांक अधिक निर्भरता/प्रभाव तथा निम्न प्राप्तांक अपेक्षाकृत कम प्रभाव को व्यक्त करते हैं।

शोध उपकरण

स्मार्ट फोन आसक्ति के मापन हेतु डॉ. विजयश्री एवं डॉ. मसऊद अंसारी द्वारा निर्मित स्मार्ट फोन आसक्ति मापनी का उपयोग किया गया। इसमें 23 कथन हैं और बाध्यकारी प्रवृत्ति, भूलने की प्रवृत्ति, ध्यान की कमी, अवसाद एवं चिंता, भूख एवं नींद में व्यवधान तथा सामाजिक अलगाव के छह आयाम सम्मिलित हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मापन हेतु डॉ. अरुण कुमार सिंह एवं डॉ. श्रुति नारायण द्वारा निर्मित भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी का प्रयोग किया गया। इसमें 31 कथन तथा भावनाओं की समझ, प्रेरणा की समझ, सहानुभूति और संबंध प्रबंधन के चार आयाम हैं।

आँकड़ा-संग्रह प्रक्रिया

चयनित विद्यालयों से औपचारिक अनुमति प्राप्त करने के बाद निर्धारित समय पर विद्यार्थियों को शोध का उद्देश्य और उत्तरों की गोपनीयता समझाई गई। दोनों मापनियों का प्रशासन समान विद्यालयी परिस्थितियों में किया गया। संकलित उत्तर-पत्रकों की पूर्णता जाँची गई और निर्धारित उत्तर-कुंजी के अनुसार अंकन किया गया। इसके बाद प्राप्तांकों को क्षेत्र के आधार पर व्यवस्थित कर सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए तैयार किया गया।

समूह निर्माण एवं सांख्यिकीय तकनीकें

समस्त 800 विद्यार्थियों के स्मार्ट फोन आसक्ति प्राप्तांकों का समग्र माध्य 70.16 प्राप्त हुआ। इस आधार पर 70 अथवा उससे कम प्राप्तांक वाले विद्यार्थियों को कम स्मार्ट फोन प्रभाव समूह और 71 अथवा उससे अधिक प्राप्तांक वाले विद्यार्थियों को अधिक स्मार्ट फोन प्रभाव समूह में वर्गीकृत किया गया। समूहों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन और स्वतंत्र नमूना टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण 0.05 सार्थकता स्तर पर किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 2

तालिका 2 शहरी विद्यार्थियों में स्मार्ट फोन आसक्ति के स्तर के अनुसार भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना

स्मार्ट फोन आसक्ति	संख्या	माध्य	मानक विचलन	माध्यांतर	टी-मूल्य	स्वतंत्रता की मात्रा	पी-मूल्य
कम प्रभाव	198	22.17	4.96	7.96	14.33	398	0.001 से कम
अधिक प्रभाव	202	14.21	6.08				

व्याख्या: शहरी क्षेत्र के 400 विद्यार्थियों में कम स्मार्ट फोन प्रभाव समूह के 198 विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का माध्य 22.17 तथा मानक विचलन 4.96 प्राप्त हुआ। अधिक प्रभाव समूह के 202 विद्यार्थियों का माध्य 14.21 तथा मानक विचलन 6.08 रहा। दोनों समूहों के बीच 7.96 अंकों का माध्यांतर पाया गया। प्राप्त टी-मूल्य 14.33, स्वतंत्रता की मात्रा 398 तथा पी-मूल्य 0.001 से कम रहा। इसलिए यह अंतर 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है और प्रथम शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। यह परिणाम दर्शाता है कि शहरी विद्यार्थियों में स्मार्ट फोन आसक्ति के स्तर के अनुसार भावनात्मक बुद्धिमत्ता में उल्लेखनीय अंतर विद्यमान है।

तालिका 3

तालिका 3 ग्रामीण विद्यार्थियों में स्मार्ट फोन आसक्ति के स्तर के अनुसार भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना

स्मार्ट फोन आसक्ति	संख्या	माध्य	मानक विचलन	माध्यांतर	टी-मूल्य	स्वतंत्रता की मात्रा	पी-मूल्य
कम प्रभाव	219	22.06	5.21	7.16	13.13	398	0.001 से कम
अधिक प्रभाव	181	14.90	5.69				

व्याख्या: ग्रामीण क्षेत्र के 400 विद्यार्थियों में कम स्मार्ट फोन प्रभाव समूह के 219 विद्यार्थियों का भावनात्मक बुद्धिमत्ता माध्य 22.06 तथा मानक विचलन 5.21 पाया गया। अधिक प्रभाव समूह में 181 विद्यार्थियों का माध्य 14.90 तथा मानक विचलन 5.69 रहा। दोनों समूहों के मध्य 7.16 अंकों का माध्यांतर प्राप्त हुआ। टी-मूल्य 13.13, स्वतंत्रता की मात्रा 398 और पी-मूल्य 0.001 से कम रहा। अतः अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है और द्वितीय शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। परिणाम यह संकेत करता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों में भी स्मार्ट फोन आसक्ति के अधिक स्तर वाले समूह की भावनात्मक बुद्धिमत्ता तुलनात्मक रूप से कम है।

तालिका 4

तालिका 4 शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में प्राप्त माध्य प्रवृत्तियों का वर्णनात्मक अवलोकन

क्षेत्र	कम प्रभाव समूह का माध्य	अधिक प्रभाव समूह का माध्य	माध्यांतर
शहरी	22.17	14.21	7.96
ग्रामीण	22.06	14.90	7.16

व्याख्या: वर्णनात्मक रूप से दोनों क्षेत्रों में एक समान दिशा की प्रवृत्ति दिखाई देती है—कम प्रभाव समूह का भावनात्मक बुद्धिमत्ता माध्य अधिक प्रभाव समूह की तुलना में उच्च है। शहरी क्षेत्र में माध्यांतर 7.96 और ग्रामीण क्षेत्र में 7.16 रहा। यह सारणी केवल दोनों स्वतंत्र क्षेत्रीय विश्लेषणों के प्राप्त माध्यों का वर्णनात्मक अवलोकन प्रस्तुत करती है; इसके आधार पर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच प्रत्यक्ष सांख्यिकीय श्रेष्ठता अथवा क्षेत्रीय प्रभाव का निष्कर्ष नहीं निकाला गया है, क्योंकि उस प्रकार का पृथक परीक्षण इस शोध-पत्र में नहीं किया गया।

प्रमुख परिणाम

1) शहरी विद्यार्थियों में कम स्मार्ट फोन प्रभाव समूह की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का माध्य 22.17 और अधिक प्रभाव समूह का माध्य 14.21 पाया गया। दोनों समूहों के मध्य अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक रहा।
2) ग्रामीण विद्यार्थियों में कम प्रभाव समूह का भावनात्मक बुद्धिमत्ता माध्य 22.06 तथा अधिक प्रभाव समूह का माध्य 14.90 प्राप्त हुआ और यह अंतर भी सांख्यिकीय रूप से सार्थक रहा।
3) शहरी क्षेत्र में कम एवं अधिक प्रभाव समूहों का माध्यांतर 7.96 अंक तथा ग्रामीण क्षेत्र में 7.16 अंक प्राप्त हुआ।
4) दोनों क्षेत्रों में कम स्मार्ट फोन प्रभाव वाले विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता अधिक प्रभाव वाले विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाई गई।

5) दोनों शून्य परिकल्पनाएँ अस्वीकृत हुईं, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि स्मार्ट फोन आसक्ति के स्तर के अनुसार भावनात्मक बुद्धिमत्ता में सार्थक समूह-अंतर विद्यमान है।
6) शहरी एवं ग्रामीण दोनों संदर्भों में परिणामों की दिशा समान रही, किंतु क्षेत्रों के बीच प्रत्यक्ष अंतर की सांख्यिकीय जाँच नहीं की गई; इसलिए क्षेत्रीय श्रेष्ठता का कोई निष्कर्ष प्रस्तुत नहीं किया गया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र ने स्मार्ट फोन आसक्ति और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयी संदर्भों में पृथक रूप से समझने का प्रयास किया। प्राप्त परिणामों का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि दोनों क्षेत्रों में कम स्मार्ट फोन प्रभाव वाले विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्य प्राप्तांक अधिक प्रभाव वाले विद्यार्थियों से स्पष्ट रूप से उच्च पाए गए। शहरी समूह में 7.96 और ग्रामीण समूह में 7.16 अंकों का माध्यांतर इस समान दिशा को रेखांकित करता है। अतः स्मार्ट फोन संबंधी व्यवहार को केवल शहरी जीवनशैली की समस्या मानना उचित नहीं होगा; ग्रामीण विद्यार्थियों में भी अधिक आसक्ति के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता के तुलनात्मक रूप से कम प्राप्तांक पाए गए।

इन निष्कर्षों की व्याख्या सावधानी के साथ की जानी चाहिए। शोध अप्रयोगात्मक है और स्मार्ट फोन आसक्ति के स्तर के आधार पर निर्मित समूहों की तुलना करता है। इसलिए यह दावा नहीं किया जा सकता कि स्मार्ट फोन आसक्ति ने स्वयं भावनात्मक बुद्धिमत्ता को घटाया है। उपलब्ध प्रमाण इतना स्पष्ट करते हैं कि कम और अधिक आसक्ति वाले समूहों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में सार्थक अंतर विद्यमान है। इस आधार पर विद्यालयों में डिजिटल अनुशासन, आत्म-नियमन, भावनात्मक साक्षरता और स्वस्थ सामाजिक सहभागिता को एकीकृत रूप से विकसित करने की आवश्यकता सामने आती है।

शोध का शैक्षिक क्रियान्वयन

शहरी विद्यालयों में विद्यार्थियों को निरंतर डिजिटल उपलब्धता, सामाजिक माध्यमों की अधिकता और स्क्रीन-आधारित गतिविधियों के बीच समय-संतुलन विकसित करने की आवश्यकता हो सकती है। विद्यालय दैनिक अध्ययन-योजना, उपकरण-मुक्त गतिविधियों, सामूहिक संवाद और वास्तविक सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देकर डिजिटल निर्भरता को संतुलित करने में सहायता कर सकते हैं। इसके साथ भावनात्मक अभिव्यक्ति, सहानुभूति और संबंध प्रबंधन को कक्षा तथा सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों से जोड़ा जाना उपयोगी होगा।

ग्रामीण विद्यालयों में डिजिटल कार्यक्रमों का उद्देश्य केवल तकनीकी पहुँच बढ़ाना नहीं होना चाहिए, बल्कि उपयोग की गुणवत्ता और अनुशासन पर भी समान ध्यान देना चाहिए। जैसे-जैसे स्मार्ट फोन और इंटरनेट की पहुँच बढ़ती है, विद्यार्थियों को सुरक्षित उपयोग, समय-प्रबंधन, विश्वसनीय शैक्षिक सामग्री की पहचान और मनोरंजन तथा अध्ययन के बीच संतुलन का प्रशिक्षण आवश्यक होगा। ग्रामीण संदर्भ में विद्यालय, शिक्षक और परिवार मिलकर डिजिटल अवसर को शैक्षिक लाभ में बदल सकते हैं और अत्यधिक निर्भरता से जुड़े व्यवहार के प्रति प्रारंभिक जागरूकता विकसित कर सकते हैं।

दोनों क्षेत्रों के लिए विद्यालयी परामर्श सेवाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसे विद्यार्थी जिनमें निरंतर फोन जाँचने, अध्ययन से ध्यान हटने, नींद में व्यवधान या प्रत्यक्ष सामाजिक संपर्क में कमी जैसे संकेत दिखाई दें, उनके साथ दंडात्मक व्यवहार के स्थान पर संवादात्मक मार्गदर्शन किया जाना चाहिए। डिजिटल अनुशासन को भय या निषेध के माध्यम से नहीं, बल्कि आत्म-जागरूकता और उत्तरदायित्व के माध्यम से विकसित करना अधिक शैक्षिक दृष्टि से उपयोगी होगा।

सुझाव

1) शहरी एवं ग्रामीण दोनों विद्यालयों में आयु-उपयुक्त डिजिटल अनुशासन कार्यक्रम विकसित किए जाएँ।
2) विद्यार्थियों को स्मार्ट फोन के शैक्षणिक, सामाजिक और मनोरंजनात्मक उपयोग के बीच अंतर समझाने के लिए व्यवहारिक गतिविधियाँ आयोजित की जाएँ।
3) विद्यालयों में भावनाओं की पहचान, आत्म-नियमन, सहानुभूति और संबंध प्रबंधन पर आधारित जीवन-कौशल सत्र नियमित रूप से संचालित किए जाएँ।
4) अभिभावकों को मोबाइल उपयोग की केवल अवधि पर नियंत्रण करने के स्थान पर उपयोग के उद्देश्य, रात्रिकालीन उपयोग और पारिवारिक संवाद पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया जाए।
5) ग्रामीण विद्यालयों में डिजिटल पहुँच बढ़ाने के साथ सुरक्षित और संतुलित उपयोग का प्रशिक्षण भी अनिवार्य रूप से जोड़ा जाए।
6) शहरी विद्यालयों में सामाजिक माध्यमों की अधिकता, ऑनलाइन मनोरंजन और लगातार उपलब्ध रहने के दबाव से संबंधित जागरूकता गतिविधियाँ आयोजित की जाएँ।
7) भावी शोध में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच प्रत्यक्ष सांख्यिकीय तुलना हेतु पृथक परिकल्पना और उपयुक्त परीक्षण सम्मिलित किया जा सकता है।
8) स्मार्ट फोन आसक्ति के छह आयामों और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के चार आयामों का पृथक-पृथक क्षेत्रीय विश्लेषण किया जा सकता है।
9) भविष्य में निजी विद्यालयों, विभिन्न कक्षाओं तथा अन्य जिलों के विद्यार्थियों को सम्मिलित कर निष्कर्षों की व्यापकता का परीक्षण किया जा सकता है।
10) अनुदैर्ध्य अथवा अर्ध-प्रयोगात्मक शोध द्वारा डिजिटल अनुशासन कार्यक्रमों और भावनात्मक कौशल प्रशिक्षण के दीर्घकालीन परिणामों का अध्ययन किया जा सकता है।

REFERENCES

Arrivillaga, C., Rey, L., and Extremera, N. (2022). Psychological Stress, Repetitive Thinking, and Problematic Smartphone Use in Adolescents: An Emotional Intelligence-Based Analysis. Journal of Affective Disorders, (किशोरों में मनोवैज्ञानिक तनाव, विचारों की पुनरावृत्ति और समस्यात्मक स्मार्ट फोन उपयोग: भावनात्मक बुद्धिमत्ता आधारित विश्लेषण. जर्नल ऑफ अफेक्टिव डिसऑर्डर्स) 296, 1–8. https://doi.org/10.1016/j.jad.2021.09.021

Beranuy, M., Oberst, U., Carbonell, X., and Chamarro, A. (2009). Problematic Internet and Mobile Phone use, Clinical Symptoms, and the Role of Emotional Intelligence. Computers in Human Behavior, (समस्यात्मक इंटरनेट एवं मोबाइल फोन उपयोग, नैदानिक लक्षण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका. कम्प्यूटर्स इन ह्यूमन बिहेवियर) 25(5), 1182–1187. https://doi.org/10.1016/j.chb.2009.03.001

Farsani, A. A. (2025). Legal and Ethical Implications of Artificial Intelligence: Balancing Innovation, Responsibility, and Human Rights. ShodhSamajik: Journal of Social Studies, (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कानूनी और नैतिक पहलू: इनोवेशन, ज़िम्मेदारी और मानवाधिकारों के बीच संतुलन। शोधसामाजिक: जर्नल ऑफ़ सोशल स्टडीज़) 2(2), 146–152. https://doi.org/10.29121/ShodhSamajik.v2.i2.2025.53

Goleman, D. (1995). Emotional Intelligence: Why it Can Matter More Than IQ. Bantam Books. (इमोशनल इंटेलिजेंस: यह बुद्धिलब्धि से अधिक महत्त्वपूर्ण क्यों हो सकती है. बैंटम बुक्स)

Kun, B., and Demetrovics, Z. (2010). Emotional Intelligence and Addictions: A Systematic Review. Substance Use and Misuse, (भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आसक्ति: एक व्यवस्थित समीक्षा. सब्सटेंस यूज एंड मिसयूज) 45(7–8), 1131–1160. https://doi.org/10.3109/10826080903567855

Mascia, M. L., Agus, M., and Penna, M. P. (2020). Emotional Intelligence, Self-Regulation, and Smartphone Addiction: Their Relationship with Student Well-Being and Quality of Life. Frontiers in Psychology, (भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-नियमन और स्मार्ट फोन आसक्ति: विद्यार्थी कल्याण एवं जीवन-गुणवत्ता से इनका संबंध. फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी) 11, 375. https://doi.org/10.3389/fpsyg.2020.00375

Mayer, J. D., Salovey, P., and Caruso, D. R. (2000). Models of Emotional Intelligence. Intelligence, (भावनात्मक बुद्धिमत्ता और पारंपरिक बुद्धिमत्ता मानकों का समन्वय. इंटेलिजेंस) 27, 267–298. https://doi.org/10.1016/S0160-2896(99)00016-1

Walia, C. K. (2025). Artificial Intelligence and News Anchoring: Transformations, Challenges, and Ethical Implications. ShodhVichar: Journal of Media and Mass Communication, (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और न्यूज़ एंकरिंग: बदलाव, चुनौतियाँ और नैतिक पहलू। शोधविचार: मीडिया और जनसंचार का जर्नल) 1(1), 109-115. https://doi.org/10.29121/ShodhVichar.v1.i1.2025.70